Indian Council of Agricultural Research
PR Unit, Krishi Bhavan, New Delhi

Newspaper/Magazine: हिन्दुस्तान	Date: 14/9/2005
Place of Publication : Delhi/Chandigarh/Bangalore/Meerut/Jaipur/Faridabad	

त्तर के दशक के राक्षसी पौधे ने फिर पसारे पैर

ल्ली (स.डे.)। सत्तर के दशक में पूरे देश में कहर बरपाने वाली ी पार्थेनियम घास (कांग्रेस घास या गाजर बूटी) एक बार फिर सर हो है। लेकिन जबलपुर स्थित नेशनल रिसर्च सेंटर फॉर वीड साइंस आरसीडब्ल्यूएस) ने त्वचा संबंधी बीमारियां पैदा करने वाले इस े खरपतवार को काबू करने के लिए मेक्सिको की एक खास कीट) को छोड़ने सिफारिश की है जो पार्थेनियम को फलने-फूलने से ही चट कर जाता है। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद सीएआर) ने भी पार्थेनियम पर जैविक नियंत्रण के इस तरीके को हरी दिखाते हुए कहा है कि दूसरी व्यावसायिक फसलों को उक्त कीड़े से ख़तरा नहीं है और यह चुन-चुन कर सिर्फ पार्थेनियम का सफाया ा है।

पचास के दशक में अमेरिका के चर्चित पीएल-480 कार्यक्रम के तहत वाले गेहूं के साथ पहुंचे पार्थेनियम खरपतवार के बीज बाद में पूरे देश ज़ी से फैलते गए और इसने आदमी के साथ-साथ जानवरों को भी ा शिकार बनाना शुरू किया। पौधे की चोटी पर कांग्रेसी टोपी की तरह द फूल खिलने के कारण इसे कांग्रेस घास या गाजर के पौधे से समानता ारण गाजर बूटी कहा गया। सत्तर के दशक में पूरे देश में कहर बरपाने ाद एक बार फिर पार्थेनियम तेजी से बंजर मैदानों, चरागाहों, खुले जंगलों, बगीचों, पार्कों, सड़कों व रेल लाइन के किनारों को अपनी गिरफ में ले रहा है। इसके बीज हवा, पानी और जानवरों के जरिए आसानी स फैलते हैं। एक महीने में ही इसका पौधा बीज बनाने लगता है और एक पौधे से कम से कम 25,000 बीज तैयार होते हैं।

कीट करेंगे जहरीली गाजर घास से मुकाबला

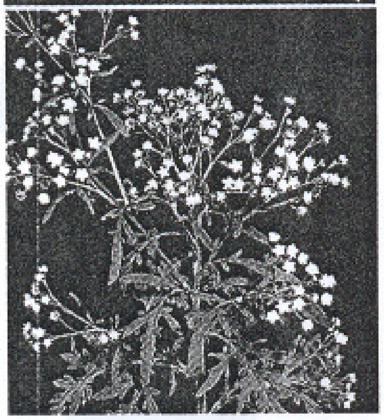

पार्थेनियम से निपटने के लिए जबलपुर स्थित शोध संस्थान मेक्सिको की जाइगोग्रामा नाम के भृंग को लेकर आया है जो इस खरपतवार को फलने-फूलने से पहले ही खा जाता है। पहले यह आशंका जताई जा रही थी कि तितली सूरजमुखी जैसी अन्य व्यावसायिक फसलों को भी चट कर देगा लेकिन भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान के एक दल ने परीक्षण के बाद बताया कि जाइगोग्रामा केवल पार्थेनियम को अपना भोजन बनाता है। एनआरसीडब्ल्यूएस के निदेशक एनटी यदुराजू ने बताया कि 500 से 1000 भृंगों को छोड़ने से किसी स्थान विशेष से पार्थेनियम का सफाया किया ज सकता है। एक जगह खरपतवार से निपटने के बाद ये कीट इसकी खोज में दूसरी ओर निकल जाते हैं। संस्थान इन कीटों का प्रजजन कर इन्हें मुफ्त में बांट रहा है। यहां तक कि मांग करने पर कीटों को कूरियर से भेजने की व्यवस्था की गई है। देहरादून स्थित वन शोध संस्थान (एफआरआई) ने पार्थेनियम से प्लाई बनाने में सफलता हासिल की है और कुछ अन्य वैज्ञानिकों ने इसे लाभकारी कम्पोस्ट में भी बदला है।